*बैंकिंग पर्यवेक्षण पर कुछ दृष्टिकोण**

एम के जैन

श्री मंगल गोस्वामी, कार्यकारी निदेशक, एसईएसीईएन केंद्र, श्री रैहान ज़मील, वरिष्ठ सलाहकार, वित्तीय स्थिरता संस्थान, एशिया-प्रशांत अर्थव्यवस्थाओं के पर्यवेक्षण निदेशक। देवियो और सज्जनो ! आप सभी को नमस्कार !

रिज़र्व बैंक को पर्यवेक्षण निदेशकों के इस सम्मेलन की मेजबानी करते हुए खुशी हो रही है। एसईएसीईएन रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेंटर और एफएसआई ने उन विषयों की एक उत्कृष्ट शृंखला तैयार की है जो सामयिक और प्रासंगिक दोनों हैं, जिसमें एशिया-प्रशांत क्षेत्र में प्रमुख बैंकिंग जोखिम, अमेरिका और यूरोप में हाल की बैंक विफलताओं से सीखे गए सबक और बैंकों में सुदृढ़ता निर्माण हेतु रणनीतियाँ शामिल हैं। वित्त की बदलती दुनिया में, यह जरूरी है कि हम आगे आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए पिछले अनुभवों से लगातार सीख हासिल करें। यह सम्मेलन, एशिया-प्रशांत में एक मजबूत और अधिक सुदृढ़ बैंकिंग क्षेत्र की दिशा में विचारों का आदान-प्रदान करने और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

विदेश में हाल की बैंक विफलताओं के बाद, बैंकिंग पर्यवेक्षकों को एक ओर वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने और दूसरी ओर अपने कार्यों के नैतिक संकट से उबरने, के बीच एक नाजुक संतुलन की तलाश जैसा चुनौतीपूर्ण कार्य का सामना करना पड़ता है। विवेकपूर्ण विनियमों को लागू कर, प्रभावी जोखिम-आधारित पर्यवेक्षण स्थापित कर, पारदर्शिता को बढ़ावा दे कर, यथासमय हस्तक्षेप कर और स्वतंत्रता और जवाबदेही बनाए रख कर, पर्यवेक्षक एक इष्टतम संतुलन बनाने का प्रयास कर सकते हैं जो नैतिक संकट के जोखिमों को कम करते हुए स्थिरता को बढ़ावा देने के साथ-साथ प्रत्यास्थ और टिकाऊ बैंकिंग में सकारात्मक योगदान देता है। इससे वास्तविक अर्थव्यवस्था को भी बल मिलता है।

वास्तव में, पर्यवेक्षकों ने, सिर्फ विनियामक अनुपालन प्रवर्तनकर्ता से लेकर जोखिम-मूल्यांकनकर्ता बनने तक का एक लंबा सफ़र तय किया है। नए पर्यवेक्षी उपकरणों का लक्ष्य आनुपातिकता और जोखिम दृष्टि के सिद्धांतों के आधार पर एक दूरदर्शी और सुनिर्धारित पर्यवेक्षी दृष्टिकोण विकसित करना है। इस दृष्टिकोण में पर्यवेक्षित संस्थाओं (एसई) में उभरते जोखिमों और कारोबार मॉडल पर निरंतर ध्यान केंद्रित करना शामिल है।

आज, मैं कुछ उभरते मुद्दों, भारतीय अनुभव और कुछ क्षेत्रों पर अपना दृष्टिकोण साझा करना चाहता हूं, जिन पर, मेरा मानना है कि, पर्यवेक्षकों को ध्यान देना चाहिए।

नए मसले

निरंतर विकसित हो रहे बैंकिंग परिदृश्य में, कई नई चुनौतियाँ सामने आई हैं, जिन पर पर्याप्त ध्यान देने और सक्रिय उपायों की आवश्यकता है। मैं तीन महत्वपूर्ण मुद्दों की चर्चा करना चाहूंगा।

सबसे पहला, बैंकिंग एक महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी क्रांति के दौर से गुज़र रहा है, जो फिनटेक कंपनियों के उद्भव से प्रेरित है। यह पारंपरिक बैंकों को डिजिटल परिवर्तन अपनाने एवं चुस्त और नवोन्वेषी बनने के लिए प्रेरित कर रहा है। जहाँ प्रौद्योगिकी बढ़ी हुई दक्षता और बेहतर ग्राहक अनुभव जैसे कई लाभ लाती है, वहीं कई प्रकार के जोखिम भी उत्पन्न करती है। इसलिए, बैंकों को नई तकनीकों के अभिग्रहण का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करना चाहिए और संभावित कमजोरियों को दूर करने हेतु पर्याप्त नियंत्रण और सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करने चाहिए। इसके अतिरिक्त, आउटसोर्सिंग से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिए तीसरे पक्ष के प्रौद्योगिकी प्रदाताओं पर निर्भरता के लिए सशक्त उचित प्रक्रिया और जोखिम प्रबंधन प्रथाओं की आवश्यकता होती है।

दूसरा, प्रौद्योगिकी से निकटता से जुड़ा हुआ मुद्दा डेटा का मुद्दा है। बैंकिंग उद्योग, अपने कारोबार की प्रकृति के कारण, डेटा का भंडार रखता है जिसका उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। इस डेटा में ग्राहक जानकारी, वित्तीय लेनदेन, साख पूर्ववृत्त और बहुत कुछ शामिल हैं। हालाँकि इस डेटा से

* 14 जून 2023 को मुंबई में एशिया प्रशांत अर्थव्यवस्थाओं के पर्यवेक्षण निदेशकों के 25वें एसईएसीईएन-एफएसआई (SEACEN-FSI) सम्मेलन में भारतीय रिज़र्व बैंक के उप गवर्नर, श्री एम के जैन का आरंभिक वक्तव्य।

मूल्य प्राप्त करने के महत्वपूर्ण अवसर हैं, लेकिन इसके प्रबंधन से जुड़े अंतर्निहित जोखिमों को स्वीकार करना और उनका समाधान करना महत्वपूर्ण है, जिसमें डेटा के दुरुपयोग और गोपनीयता से संबंधित जोखिम भी शामिल हैं।

तीसरा, तेजी से परस्पर जुड़ी दुनिया में, भू-राजनीतिक और समष्टि-आर्थिक जोखिम हैं। राजनीतिक अस्थिरता और व्यापार में अवरोध का बैंकों के ग्राहकों पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकता है, जिसके परिणामस्वरूप बैंक दबाव में आ सकते हैं। इसी तरह, हाल ही में समन्वित मौद्रिक सख्ती, जैसे समष्टि-आर्थिक घटनाक्रम, बैंकिंग क्षेत्र को आघात पहुंचा सकते हैं।

इस प्रकार, पहले से कहीं अधिक, तकनीकी प्रगति को संभालने और अननुमेय जोखिम से निपटने के लिए क्षमता निर्माण हेतु, बैंकों और बैंकिंग पर्यवेक्षक, दोनों की आवश्यकता है। इसमें ज्ञान और कौशल को बढ़ाना और दीर्घकालिक सोच के साथ प्रौद्योगिकी में निवेश करना शामिल होगा।

भारतीय परिप्रेक्ष्य

अब, मैं आपको भारत में किए गए कुछ कार्यों के बारे में जानकारी देता हूँ।

भारत ने, दुनिया की सबसे तेज अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में, हाल में अपने बैंकिंग क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलावों को देखा है। उच्च अनर्जक आस्तियां, खराब पूंजी पर्याप्तता स्तर और खासा घाटे से जूझने के बाद, भारतीय बैंकिंग क्षेत्र, आज मजबूती, स्थिरता और प्रत्यास्थता दिखा रहा है। इसका श्रेय सरकार, आरबीआई और स्वयं बैंकों के संयुक्त प्रयासों को जाता है।

पिछले कुछ वर्षों में, रिज़र्व बैंक ने अपनी पर्यवेक्षी प्रणालियों में उल्लेखनीय वृद्धि की है। उसने अपने इकाई-आधारित पर्यवेक्षी दृष्टिकोण को रूपांतरित कर अधिक विषयगत और गतिविधि-आधारित बनाया है। तत्परता में सुधार, लचीलापन लाने और विशेषज्ञता बढ़ाने के लिए पर्यवेक्षी कार्यशैली में संरचनात्मक परिवर्तन लागू किए गए हैं। वाणिज्यिक बैंकों, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) और शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) के लिए एक एकीकृत और संगत पर्यवेक्षी दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें चिह्नित की गई कमजोरियों के मूल कारणों को दूर करने पर अधिक जोर दिया गया है।

पर्यवेक्षी ढांचे की प्रभाविता को बढ़ाने के लिए, रिज़र्व बैंक ने विभिन्न विश्लेषणात्मक उपकरणों को नियोजित किया है। इनमें प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, दबाव परीक्षण मॉडल, भेद्यता आकलन, साइबर से जुड़े मुख्य जोखिम संकेतक, फ़िशिंग और साइबर पूर्व-परीक्षण अभ्यास, केवाईसी/एएमएल मानदंडों के अनुपालन का लक्षित मूल्यांकन और सूक्ष्म-डेटा विश्लेषण शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, रिज़र्व बैंक, पर्यवेक्षित संस्थाओं के पर्यवेक्षण में और भी गहरी दृष्टि प्राप्त करने के लिए, आवश्यक सुरक्षा उपाय के साथ, पर्यवेक्षी डेटा-संचालन में उन्नत विश्लेषकी, कृत्रिम मेधा और यंत्र अधिगम को अपनाने की प्रक्रिया में है। ये पहल, अपनी निगरानी को मजबूत करने के लिए प्रौद्योगिकी और डेटा-संचालित दृष्टिकोण की शक्ति का उपयोग करने के प्रति रिज़र्व बैंक की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

पर्यवेक्षकों में पर्याप्त कौशल और क्षमता निर्माण के महत्व को समझते हुए, रिज़र्व बैंक ने एक विशेष पर्यवेक्षण कॉलेज (सीओएस) की स्थापना की है। यह कॉलेज बड़ी संख्या में सामान्य और विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। निरंतर सीखने और अद्यतन होने की सुविधा के लिए एक एकीकृत अधिगम प्रबंध प्रणाली भी शुरू की गई है।

पर्यवेक्षकों के लिए ध्यान देने योग्य क्षेत्र

आगे बढ़ते हुए, मैं, नौ विशिष्ट क्षेत्रों पर जोर देना चाहूंगा जहां पर्यवेक्षण को अधिक सशक्त रूप से संकेंद्रित किया जाना चाहिए।

पहला, अभिशासन सर्वोपरि है और पर्यवेक्षी चिंताओं का मूल कारण है। प्रभावी कॉर्पोरेट अभिशासन और सुदृढ़ विनियमन एक-दूसरे को मजबूत बनाते हुए साथ-साथ चलते हैं। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में हाल की बैंक विफलताओं ने अभिशासन संबंधी चिंताओं को दूर करने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया है।

दूसरा, पर्यवेक्षकों को बैंकों द्वारा अपनाए गए कारोबार मॉडल की बारीकी से जांच करनी चाहिए और सावधानीपूर्वक आकलन करना चाहिए कि क्या ये मॉडल संस्थानों की जोखिम वहन क्षमता के अनुरूप हैं। इस मूल्यांकन में, कारोबार वृद्धि अनुमानों के स्तर, आय क्षमता की स्थिरता, विविधीकरण की सीमा, प्रावधानीकरण व्याप्ति और मूल्य निर्धारण के उचित तंत्र, आदि में पैठ कर निरीक्षण करना शामिल किया जाना चाहिए।

तीसरा, पर्यवेक्षकों को आईटी से जुड़े मुद्दों की समग्रता से जांच करने की आवश्यकता है। यह निर्धारित करना महत्वपूर्ण है कि क्या बैंकों के पास मजबूत आईटी प्रणाली विकसित करने की क्षमता है, जो उनकी कारोबारी रणनीतियों के अनुरूप हो। बैंकों को, अपने आईटी बुनियादी ढांचे का भविष्यानुकूलन अनिवार्य हो जाता है, जिसके लिए पूंजी और परिचालन दोनों व्यय में रणनीतिक निवेश की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे आभासी कार्य परितंत्र और साइबर जोखिम अधिक प्रचलित होते जा रहे हैं, प्रभावी आईटी अभिशासन का महत्व बढ़ता जा रहा है।

चौथा, पर्यवेक्षकों को आश्वासन कार्यों - जोखिम प्रबंधन, अनुपालन और आंतरिक लेखा परीक्षा – की प्रभाविता पर ध्यान देना चाहिए। आश्वासन कार्य एक महत्वपूर्ण सुरक्षा के रूप में कार्य करता है जो बैंक के संचालन, जोखिम प्रबंधन प्रथाओं और विनियामकीय अपेक्षाओं के अनुपालन का स्वतंत्र और वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करता है। आश्वासन कार्यों की गुणवत्ता का आकलन करके, पर्यवेक्षक, संभावित कमजोरियों की पहचान कर सकते हैं, आंतरिक नियंत्रण की प्रभाविता का आकलन कर सकते हैं और जोखिम वृद्धि से पहले उसे कम कर सकते हैं।

पांचवां, संपूर्ण संगठन स्तर पर अनुपालन संस्कृति एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो पर्यवेक्षी ध्यानाकर्षण की अपेक्षा रखता है। किसी संस्थान की संस्कृति का मूल्यांकन करते समय चुनौतियाँ पैदा हो सकती हैं, पर्यवेक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अनुपालन संस्थान के भीतर सभी आयामों में व्याप्त हो और इकाई के वरिष्ठ प्रबंधन द्वारा समर्थित हो।

छठा, बैंकिंग पर्यवेक्षकों के लिए संचार एक अनिवार्य उपकरण है। यह पर्यवेक्षित संस्थाओं को अपेक्षाओं के प्रभावी संप्रेषण की सुविधा प्रदान करता है, नियमों के अनुपालन का समर्थन करता है, सहयोग को बढ़ावा देता है, संकट प्रबंधन क्षमताओं और लोक-विश्वास को बढ़ावा देता है। स्पष्ट और पारदर्शी संचार को प्राथमिकता देकर, पर्यवेक्षक अपनी निरीक्षक-भूमिका को मजबूत कर सकते हैं और स्थिर और सुदृढ़ बैंकिंग प्रणाली में योगदान दे सकते हैं।

सातवां, चूंकि बैंकिंग पर्यवेक्षक वित्तीय स्थिरता बनाए रखने और जमाकर्ताओं के हितों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसलिए समय पर हस्तक्षेप करना और पर्यवेक्षी शक्तियों का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसा करने के लिए, पर्यवेक्षकों के पर्यवेक्षी हस्तक्षेप हेतु एक औपचारिक एस्केलेशन मैट्रिक्स विकसित करना उपयोगी होगा जो पर्यवेक्षकों को, हस्तक्षेप का उचित स्तर और इससे जुड़े भावी कार्रवाईयों को निर्धारित करने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टि प्रदान करता है।

आठवां, डेटा विश्लेषकी पर्यवेक्षकों को डेटा के अंबार से मूल्यवान निष्कर्ष और दृष्टि प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करता है। यह उन्हें, डेटा-आधारित निर्णय लेने, जोखिमों की पहचान करने और वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने हेतु समय पर कार्रवाई करने में सक्षम बनाता है। डेटा विश्लेषकी शक्ति का लाभ उठाकर, बैंकिंग पर्यवेक्षक अपने पर्यवेक्षी ढांचे को काफी मजबूत बना सकते हैं।

अंत में, पर्यवेक्षकों को अपनी बाज़ार आसूचना क्षमताओं को मजबूत करना होगा। उभरते मुद्दों की पहचान करने में सोशल मीडिया सहित मीडिया इनपुट बेहद उपयोगी हो सकते हैं। व्हिसिल-ब्लोअर शिकायतें, जिन्हें अक्सर निवारण माध्यम के रूप में देखा जाता है, बाजार की जानकारी के मूल्यवान स्रोत भी बन गए हैं।

क्षमता निर्माण का महत्व

अपनी बात समाप्त करने से पहले, मैं क्षमता निर्माण के महत्व पर प्रकाश डालना चाहूंगा। जैसे-जैसे बैंक नई तकनीकों को अपनाते हैं, पर्यवेक्षकों को, इन प्रगतियों के प्रभावी निगरानी और विनियमन हेतु, आवश्यक ज्ञान, कौशल और संसाधनों से लैस होना आवश्यक है।

आज तेजी से विकसित हो रहे बैंकिंग परिदृश्य में, पर्यवेक्षक पिछड़ने का जोखिम नहीं उठा सकते। बैंकिंग पर्यवेक्षकों के लिए उद्योग के नवीनतम घटनाक्रम से अवगत रहना, अपनी पर्यवेक्षी तकनीकों को बढ़ाना, सुसंगत मानकों को बढ़ावा देना और उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को मजबूत करना आवश्यक है।

पर्याप्त संख्या में गुणवत्तापूर्ण कर्मचारियों की भर्ती और उन्हें सही कौशल और उपकरणों से लैस करके क्षमता निर्माण करना एक सतत प्रक्रिया है जो पर्यवेक्षकों को बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता और सुदृढ़ता बनाए रखने में अपनी भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाती है।

निष्कर्ष

अब मैं निष्कर्ष पर आता हूँ।

पर्यवेक्षक, तकनीकी प्रगति से अवगत रहकर, उभरते जोखिम परिदृश्य की निगरानी कर, विनियामकीय प्रगति से तालमेल रखते हुए आवश्यक क्षमता और कौशल का निर्माण कर और नवीनतम विश्लेषणात्मक उपकरणों को अपनाकर, वित्तीय स्थिरता बनाए रखने, उपभोक्ताओं की सुरक्षा करने और समुत्थानशील बैंकिंग क्षेत्र को बढ़ावा देने में अपनी प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। पिछले अनुभवों से सीखने और अंतर-अधिकारक्षेत्रीय सहयोग से आगे की चुनौतियों से बेहतर ढंग से निपटने में मदद मिल सकती है। यह एक मजबूत बैंकिंग क्षेत्र के निर्माण में योगदान दे सकता है जो एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सतत आर्थिक संवृद्धि में सहयोगी है। सम्मेलन यह मंच प्रदान करता है और मेरा मानना है कि यह सभी सहभागियों के लिए बहुत उपयोगी साबित होगा। आप सभी को मेरी शुभकामनाएं।

धन्यवाद !